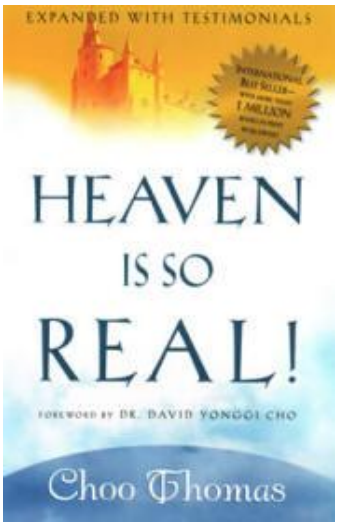

क्या आप विश्वास करते है कि स्वर्ग सचमुच में मौजूद है? कू थोमस यीशु मसीह के साथ अपनी मुलाकातों के बारें में अद्भुत कहानी बताती है जहाँ पर वह स्वर्ग कई बार गई और नरक को दो बार देखा। उनकी किताब, ''स्वर्ग कितना वास्तविक है'' यह एक किताब से भी ज्यादा है – यह खीस्त का प्रेम सन्देश है इस पीढ़ी के लिए जो उसको भूल चुकी है, जो उसे समझती नहीं है या जो उसके बारें में उदासीन है। यह किताब आपके हृदय और आत्मा को छू लेगी और आपको चुनौती देगी कि अपनी जिन्दगी को आज्ञाकारिता और शुद्धता से जीए जैसा आपने पहले कभी नहीं किया हो। ''19 जनवरी, 1996 मैं सुबह के तीन बजे उठ गई। मेरे शरीर हिल रहा था। मैंने अपने तकिए पर मुडकर उस दिशा की ओर देखा जहां से आवाज आ रहीं था, और वहाँ, सब चमकता हुआ एक सफेद वस्त्रों में आकृति थी। वह प्रभु थे ''यह सब मेरें सामिने कैसे हो सकता है? मैं आश्चर्य कर रही थी मैं कांपने लगी और प्रेम और खुशी से रोने लगी। ''मेरी पुत्री.....मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ और मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ। इस काम से पहले मैं तुमसे कई बार मुलाकात करूँगा। ''उसकी वाणी के प्रभाव, उसके शब्दों, उसके सन्देश ने मुझे अलौकिक सामर्थ से प्रहार किया..... ''एक या दो बार नहीं परन्तु उस महीनें में दस बार प्रभु यीशु उनके पंलग के बराबर में प्रकट हुआ और उनसे बातचीत की। फिर यात्रा शुरू होती है...

कू थोमस के नम्र वृतान्त में सहभागी बने जब हर स्वर्गीय यात्रा उन्हें अगली बार के लिए तैयार करती है।

यीशु की उपस्थिति के बढ़ते अचम्भे की अनुभुति कीजिए।

उसके कोमल शब्दों के भार को महसूस कीजिए।

उद्धारकर्ता के नेतृत्व में स्वर्गीय यात्राा में उसके पवित्र विचारों को सीखिए।

हृदय भेदी, अलौकिक शब्दों को जो सिंहासन से बोले गऐ, उन्हें सुनिए।

इस स्वर्ग के प्रकाशन की सुंदरता पर आश्चर्य करिए।

(1000,000) प्रतियों से भी ज्यादा बिक चुकी है, 60 देशों की भाषा में अनुवादित हो चुकी है।

(उद्घोषक बोल रहा है)

1992 में कू थोमस जो कि एक कोरियन अमेरिकन है ने नया जन्म पाया। यह कहानी इसलिए अनूठी है क्योकि अपने परिवर्तन के दो साल बाद नासरत के यीशु मसीह ने कू के साथ मुलाकात की। वह स्वर्ग में कई बार ले जायी गई और नरक उन्हे दो बार दिखाया गया। कू थोमस ने अपने अनुभवों पर एक किताब

लिखी है और उसका नाम है ''स्वर्ग कितना वास्तविक है'' और वह अक्टूबर 2003 में प्रकाशित हुई थी। प्रकाशन के एक साल के भीतर ही, यह किताब श्रेष्ठ बिकने वाली अन्तर्राष्ट्रीय किताब बन गई और साथ ही अमेरिका में यह चोटी की दस मसीही पुस्तकों में शामिल हो गई।

कैसे एक साधारण सी गृहणी जो कम अंग्रेजी बोल पाती है ने न सिर्फ उसने एक पुस्तक का प्रकाशन किया परन्तु एक साल के भीतर वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ बिकने वाली पुस्तक भी बन गई। परन्तु शायद उससे भी महतवपूर्ण प्रश्न है वह यह है कि यह सारे प्रकटन अभी क्यो? *''स्वर्ग कितना वास्तविक है''* और यह कू थोमस की कहानी है।

कू थोमस बोल रही हैः –

''खैर.....स्वर्गीय पिता, मैं धन्यवाद करती हूं कि आपने मुझे गवाही देने का मौका दिया। हालेल्लूयाह्। मैं 1992 में मसीही बनी और मैं यीशु के प्रेम में डूब गई चर्च जाने के कुछ समय बाद और बाकी की ज़िन्दगी के लिए मैं अपने आप का हर श्रेय उसको देना चाहती हूँ.....सो....

और मैं बहुत संक्षिप्त में ''स्वर्ग कितना वास्तविक है'' किताब के बारे में बोलूगीं। प्रभु यीशु मसीह ने खुद ने मुझे मेरे परिवर्तित शरीर के साथ स्वर्ग में सत्रह बार ले गया जैसे मैं जब 15 या 16 साल की थी। उसके पहले, उसने सबकुछ कदम–कदम पर तैयार किया। 1994 में उसने मुझे मेरे पूरे शरीर को पवित्र आग से अभिषेक किया, फिर एक महीने बाद उसने मुझे चर्च में आराधना सभा के दौरान् अपना दर्शन दिया फिर 1995 ईस्टर सण्डे के दिन, उसने मेरे पूरे शरीर को अपने अभिषेक से थरथरा दिया और उसके बाद से मेरा शरीर चर्च में प्रार्थना के दौरान् थरथराता है। आप देख सकते है मेरा शरीर आगे पीछे हो रहा है, अगर मैं ऐसा न करूं तो मेरा पेट बहुत कस जाता है और ऐसा महसूस हो जाता है कि फूट पड़ेगा। सो कृपया ऐसा मत सोचिए कि मेरे शरीर में कुछ खराबी है। यह पवित्र आत्मा कर रहा है क्योकि मैं यीशु के बारे में बात कर रहीं हूँ। इसलिए तब इसके पश्चात् उसने पवित्र आत्मा का मुझे बपतिस्मा दिया, नई भाषाऐं, स्वर्गीय गीत, स्वर्गीय हंसी और मैं तीन घण्टे इतना अभिषिक्त थी और फर्श पर थी व उठ नहीं पा रहीं थी क्योकि वह इतना शक्तिशाली था उसके बाद, कुछ महीनों पश्चात् पादरी लैरी लेण्डीफ ने मेरी लिए भविष्यवाणी की और उन्होनें मुझ से कहा कि परमेश्वर मुझे खास तरीके से इस्तेमाल करना चाहता हैं और उनकी भविष्यवाणी हजार गुना ज्यादा सच निकली। इसके बाद, जनवरी 1996, प्रभु यीशु ने मुझे अपना दर्शन दिया। वह दस बार मुझसे मिलने आया कि वह मुझे बता सकें कि वह मुझे किस प्रकार से इस्तेमान करेगा और सारी बातें, उसकी योजनाएं और मुझे सबकुछ बताया जैसा कि पुस्तक में लिखा है। परन्तु उसने मुझे यह नहीं बताया कि वह मझे स्वर्ग में ले जाएगा। सो दस बार के बाद, 19 फरवरी 1996 वह मुझे मेरे परिवर्तित

शरीर के साथ स्वर्ग ले जाना शुरू किया और जैसे उसकी आत्मा शरीर शरीर था वैसा ही मेरा भी था। हर बार, स्वर्ग ले जाने से पहिले वह मुझे समुद्र तट पर ले जाता, पृथ्वी का समुद्र का तट। सबसे पहली बार मुझे स्वर्ग ले जाने से पहिले, वह मुझे समुद्र तट की बगल में ले गया और उसने वहाँ मुझे छोटा सा पानी का पारदर्शक टुकड़ा दिखाया और फिर उसने मुझे बहुत बड़ी सी सुरगं दिखाई और इसके बाद वह मुझे स्वर्ग ले गया।

उद्घोषक बोल रहा है –

सुरगं से होकर जाने के बाद कू लिखती है, ''प्रभु और मैं उस सड़क पर चलने लगे जो पहाड़ी की चोटी से नीचे की ओर आ रही थी। इस प्रकार से हम एक बड़े से सफेद गेट पर पहुँचे जो एक सफेद इमारत के सामने था। हम उस गेट से होकर उस सफेद इमारत कि ओर जाने लगे। हम उस इमारत मे घुसे और एक लम्बे से गलियारे में चलने लगे जो कि एक बड़े कमरे की ओर जाता था और हम उस कमरे में घुस गए और जैसे मैंने नीचे की ओर देखा, मुझे पहली बार बोध हुआ कि मैने एक अलग प्रकार का वस्त्र पहना हुआ था जो कि समुद्र तट पर पहने गए वस्त्र से अलग था और मैं महसूस कर सकती थी कि कोई भारी सी वस्तु मेरे सिर पर थी। मैंने अपना हाथ बढ़ा कर छुआ तो पाया कि खूबसूरत सा ताज मेरे सिर पर रख दिया था बिना मुझे बताए। फिर मेने सीधा प्रभु की ओर देखा। वे एक सिहांसन पर बैठे हुए थे और उसने एक चमचमाता हुआ वस्त्र और सुनहरा ताज पहन रखा था और जो लोग मेरे साथ थे घुटनों के बल फर्श पर थे और उसके सामने दण्डवत कर रहे थे। कमरे की दिवारें उज्जवल पत्थरों से बनी हुई थी जो चमक रही थी। रंग बिरंगी चट्टाने ऐसा प्रभाव बना रहीं जो कमरे को सहद्य और खुशनुमा और साथ ही रहस्यमय बना रही थीं फिर, जिस प्रकार से मैं तेजी के साथ पहाड़ और सफेद इमारत में ले जायी गई थी वैसे ही तेजी के साथ मैंने अपने आप को उस समुद्र तट पर फिर दुबारा पाया।

(कू थोमस बोल रहीं है–)

सबसे पहले उसने मुझे अपना सिंहासन वाला कमरा ही दिखाया। फिर उसके बाद हम स्वर्ग से वापस आ गए और हम रेत पर पृथ्वी के समुद्र तट पर बैठ गए। फिर उसने बोलना शुरू किया। उसने कहा, ''हम अभी–अभी स्वर्ग के राज्य मे गए थे। वही लोग वहाँ पर आ पाएगें जो कि आज्ञाकारी और शुद्ध मन के है'' और उसने कहा, ''सुसमाचार का प्रचार करना बहुत जरूरी है'' और फिर वह कुछ देर रूका, और उसने कहा, ''जो अपने वेतन से दसवां अंश नहीं देते है, वह आज्ञाकारी मसीही नहीं है''। यह उसकी पहली यात्रा के आखिरी शब्द थे।

उद्घोषक बोल रहा है–

कू स्वर्ग में 16 बार और गई, इन सभी यात्राओं के बारे में वह लिखती है : ''मेरे परिर्वतित शरीर में, मैं प्रभु के साथ समुद्र तट पर चली, और फिर वह मुझे स्वर्ग ले गया। हम उन मोतीयों के समान दरवाजों से होकर गुजरें और सफेद इमारत की ओर जहाँ हमारे कपड़े बदल गए। कपड़े बदलने के बाद, हम सुनहरें पुल से होकर गुजरे, यह सब मुझे स्वाभविक लगने लगा। हर विश्वासी, मुझे निश्चय है कि हर विश्वासी इन सबसे होकर के वह स्वर्ग जाता है।

(कू थोमस बोल रही है–)

उसके बाद वह मुझे 16 बार और लेकर गया। जितनी बार भी वह मुझे लेकर गया, उसने मुझे विभिन्न चीजें दिखाई और जब उसने मुझे विशेष चीजें दिखाई तब हमेशा वह मुझसे कहता रहा, यह मैने अपने बच्चो के लिए तैयार कि है, मैं जानता हूँ उन्हे क्या अच्छा लगता है। जब उसने मुझे समुद्र तट दिखाया था तो उसने मुझसे कहा, ''तुम देख सकती हो मेरी पुत्री की यह तट कितना सुन्दर है। मै जानता हूँ की मेरे बच्चों को यह तट बहुत पसन्द है और जब वह मुझे मछलियाँ पकड़ने ले गया तो उसने कहा, मैं जानता हूँ मेरे बच्चों को मछलियाँ पकड़ना बहुत अच्छा लगता है, इसलिए मेने यह सारी वस्तुएँ जो उन्हें अच्छी लगती है तैयार की है और मैने समझा कि स्वर्ग में यह सब पृथ्वी पर से हजारों गुना ज्यादा सुन्दर है, परन्तु बहुत सी चीजें जो पृथ्वी पर है जैसे सड़के, इमारते, पेड़, पौधे, चट्टानें, फूल और ऊबड़–खाबड़ जगह वह सारी चीजे यहाँ स्वर्ग में है लेकिन यह पृथ्वी से हजारों गुना ज्यादा सुन्दर है। बहुत सुन्दर! स्वर्ग की सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता है। मैं वर्णन नहीं कर सकती हूँ कि वह कितना सुन्दर है, बहुत सुन्दर है। और मैंने यह भी समझा कि यीशु हम सब से हर एक जन से कितना प्यार करता है। जिस प्रकार से वह मुझसे बात कर रहा था, वह ऐसे कह रहा था जैसे कि ''तुम देख सकती हो कि मैं अपने बच्चों से कितना प्रेम करता हूँ और मैंने यह सब अपने बच्चों के लिए किया है।'' इसलिए वह मुझे वहाँ लेकर गया ताकि वह दिखा सके कि उसने अपने बच्चों के लिए क्या तैयार किया है ताकि हम सब यह जान जाए कि स्वर्ग में हमारे लिए क्या इन्तजार कर रहा है, सो इससे पहले कि वह आए, वह चाहता है कि सब मसीही इन बातों को जान जाए ताकि वह उत्साहित हो और वहा जाए। इसलिए मैं विश्वास करती हूँ कि उसने मुझे यह सारी चीजें दिखाई। वह मुझे

सब कुछ पूर्णतया नहीं बताता, उसने बस मुझे कुछ चीजें दिखाई, बस कुछ शब्द कहे, जरूरी शब्द उसने मुझसे कहे। वह परमेश्वर इतना प्रेमी है। 'प्रभु की जय'।

(उद्घोषक बोल रहा है–)

स्वर्ग का अनुभव करने के अलावा, कू को नरक भी दो बार दिखाया गया। वह नरक का दर्शन इस प्रकार से बताती है : मैं भॉप और काले धूँए को एक गहरे गड्ढे से उठता हुआ देख सकती थी। वह ज्वालामुखी के समान था, और अन्दर मैं लपटों को देख सकती थी जो असंख्य लोगों को झुलसा रहीं थी। वे चिल्ला रहे थे और ऐसी पीड़ा में से रो रहे थे जो एक बुरी तरह से जले हुए को ही मालूम होगा।

लोग नंगे थे बिना बालों के और एक दुसरे के करीब खड़े हुए थे और कीड़ो के समान हिल रहे थे और लपटे उनके शरीर को झुलसा रहीं थी। उनके लिए कोई छुटकारा नही था जो इस गड्ढे में थे। उनकी दिवारें बहुत गहरी थी जो चढ़ी नहीं जा सकती थी, और आग के गर्म शोले चारों थे।

लपटें चारों ओर से अचानक आ पड़ती थी। लोग वहाँ से हटते और जेसे ही वह सोचते कि अब वह सुरक्षित है, एक और आग फूट पड़ती। इन पाप के अभागे शिकारों के लिए कोई चैन नहीं था। वह इस प्रकार से झुलसने और जलने के लिए अनन्तकाल तक दण्डित थे *''यह लोग कौन है?* मैने पूछा! मेरी, पुत्री यह वह लोग है जो मुझे जानते नहीं है।

(कू थॉमस बोल रहीं है)

स्वर्ग में उसने जो कुछ भी दिखाया वह सब इतना उत्साही और विस्मयकारी था परन्तु फिर उसके बाद उसने मुझे नरक दिखाया। वह मुझे नरक ले गया, सबसे पहली चीज जो मैंने देखी वह यह थी आग, परन्तु वह एक गहरा काला और अन्तहीन गड्ढा था। लोग बिना बालों के नंगे थे। उनके ना तो बाल थे और न ही कपड़े थे। सब नंगे थे। वह दुसरे के बहुत करीब खड़े थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वह एक दुसरे को धक्का दे रहे थे क्योंकि वह आग से दूर जाना चाहते थे। हर बार जब वह हिलते, आग उनका पीछा करती, आगे और पीछे सब तरफ आग थी और यह लोग एक दूसरे के बहुत करीब खड़े थे। वह इतने पीड़ा में और दुखी दिखाई दे रहे थे कि मेरा उनके लिए रोना नहीं रूक रहा था। फिर यीशु मुझे वहाँ दुबारा लेकर गया और मेने उन्ही लोगो को दुबारा देखा। फिर मैंने कुछ आवाजे सुनी और मैंने उस दिशा में देखा, वहा बहुत सारे पूर्वी देशों के लोग थे और एक स्त्री मेरी ओर हाथ हिला रही थी और कह रहीं थी, भीषण गर्मी है। मैंने उसकी तरफ देखा और हमारी आँखे एक दुसरे से मिल गई, वह मेरी माँ थी। जब मैं जान गई की यह मेरी

माँ है, मेरा दिल टूट गया और मैं रोने लगी। मैने कभी भी इतना दुःख महसूस नहीं किया था, बहुत दुःख। इतना दुःख की मुझे नहीं पता था कि मैं क्या करूं और वह यह ही कहती रही भीषण गर्मी है और मेरी तरफ हाथ हीला रही थी और जिस प्रकार से मैंने देखा, वहाँ मैरे पिता थे। मैंरी सौतेली माँ, मेरा जवान भतीजा, वह बहुत ही जवान था जब वह मरा था और दो दोस्त भी थे जिन्हें मैं जानती थी। ओह! यह कितनी पीड़ादायक स्मृति थी और मैं रोए जा रही थी, तब प्रभु यीशु ने कहा, ''पुत्री, मेरे पास बहुत अच्छा कारण है कि मैं यह सब तुम्हे दिखाऊँ, परन्तु तुमसे ज्यादा दुःख मुझे हो रहा है।'' और मैंने उनसे कहा, प्रभु, मेरी माता, वह जवान थी जब वह मरी वह बहुत समय तक बीमार थी। मैं नहीं सोचती की वह बहुत बुरी इंसान थी। उसने कहा, ''इससे कोई फर्क नहीं पडता कि लोग कितने अच्छे है, जो कोई मुझे नहीं जानता है, यहीं एक जगह वह जाएगा।'' परन्तु मैं अपने दिल में सोच रही थी कि आप मुझे यह सब दुःख देने के लिए दिखा रहे है। मैंने उसके बारे में सोचा परन्तु मैं यीशु पर कभी गुस्सा नही हुई। मैं उसका चेहरा नहीं देख सकती थी, परन्तु मैं बता सकती हूँ कि वह मेरे साथ रो रहा था। मैं बस महसूस कर सकती थीं वह इतना दुःखी दिखाई दे रहा था, फिर उसने मेरे सिर को छुआ, मेरा हाथ पकड़ा फिर हम वहाँ से चले गए और मैं सारे समय रो रही थी जब हम वहाँ से चल रहे थे। किताब में, मैंने यह बातें विस्तृत रूप से लिखी है, सो फिर, अगली बार दुबारा जब हम वहाँ गए तो उसने मुझे एक ओर दुःखी बात दिखाई। वहाँ बहुत सारे हत्या किए हुए भ्रूण थे। वह मुझे बड़ी सी इमारत में लेकर गया। वह एक गोदाम कि तरह था। जब हम वहाँ पर चले तो मैंने सिर्फ छोटे छोटे बच्चों को देखा। और वहाँ वह सब पड़े हुए थे। और मैं रोने लगी। प्रभु यह इतने सारे बच्चे क्यो? उसने कहा, ''यह गर्भपात के द्वारा मरे हुए बच्चे है।'' मैने कहा, तू इनके साथ क्या करेगा? उसने कहा कि अगर इनकी माताए बच जाती है और स्वर्ग में आती है तो उन्हें उनका बच्चा वहाँ मिल जाएगा। बस सिर्फ इतना।

(उद्घोषक बोल रहा है–)

स्वर्ग में उनके सत्रहवीं वाली यात्रा में यीशु ने कू को बताया कि यह स्वर्ग में उनकी आखिरी यात्रा होगी। इस पर वह लिखती है :– ''उसके शब्दो ने मेरे अन्दर गइराई से हलचल पैदा कर दी। वास्तव में मेरा ह्रदय मेरे प्रभु के लिए प्रेम से भरा हुआ था। वह खड़ा हुआ और मैं जानती थी कि अब जाने का समय हो गया है। मै रोती रही परन्तु मेरे ह्रदय ने मुझको निशंचित किया कि मैं प्रभु के साथ हमेशा रहूँगी और वह हमेशा इस पृथ्वी पर मेरे साथ है। तैयार होने वाले कमरे में, प्रभु के एक स्वर्गदूत ने मुझे गले लगा लिया। ऐसी जगह पर होना इतना आनन्दित कर देने वाला था जहाँ पर इतना प्यार, करूणा और समझ थी। और जैसे मैंने कपड़े बदले, मैं बहुत अंचभित हुई कि अब्राहम और स्वर्गदूत जानते थे कि यह मेरी स्वर्ग की आखिरी

यात्रा है। जैसे मैं उस कमरे से बाहर निकली, स्वर्गदूत ने मुझे दुबारा गले लगा लिया। इस स्वर्गदूत के सुनहरे बाल थे, उसने लहराते हुए वस्त्र को पहन रखा था और चेहरा इतना कोमल और स्नेही था। वह स्वर्गदूत मेरी तरफ देख कर मुस्कुराया जब मैं प्रभु की ओर जा रही थी।

(कू थोमस बोल रहीं है)

जब प्रभु यीशु मुझे सत्रहवीं बार स्वर्ग लेकर गया, उसने मुझे बादल दिखाए और यहाँ मेरी स्वर्ग की यात्रा खत्म हुई। प्रभु यीशु ने मुझे बताया कि यह आखिरी बार मैं यहाँ पर आई हूँ। मैं तुम्हें दुबारा यहाँ तब तक नहीं लाऊँगा जब तक कि अन्तिम दिन नहीं आ जाता। मैंने महसूस किया कि मैं जानती हूँ कि यह मेरा आखिरी दिन है और मैं रोने लगी, क्योकि मैं छोड़ना नहीं चाहती थी। मैं उसकी बाँह पकड़े हुए थी और मैने कहा, प्रभु कृपया मुझे मत जाने दिजिए, मैं वापस नहीं जाना चाहती हूँ क्योकि मैं यहाँ बार–बार आना चाहती हूँ। यह मेरे लिए बहुत ही दुःखी क्षण था कि अब मैं यहाँ नहीं आ सकती हूँ, क्योकि हर बार जब मैं स्वर्ग में उसके साथ गई, तो मैंने दुःखी बातें भी देखी परन्तु शान्ति और आनन्द जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकती हूँ वह वहाँ पर था। दुःखी होते हुए भी मेरे पास खुशी थी, शान्ति थी। इतना प्रेम कि मैं कई दिनों तक रोती रहीं।

(उद्घोषक बोल रहा है)

बाइबिल उस दिन के बारे में बताती है जब प्रभु यीशु मसीह अपने चर्च के लिए वापस आएगा। *1 थिस्सलुनीकिया 4 : 16–17* **में लिखा हैं** –''जब आदेश होगा, प्रधान स्वर्गदूत का स्वर सुनाई पड़ेगा और परमेंश्वर की तुरही गुंजेगी, उस समय स्वयं प्रभु स्वर्ग से उतरेगें और जो मसीह में मृतक है, वह पहले जी उठेगें। तत्पश्चात् हम भी जो जीवित बचे होगें, उन लोगो के साथ बादलों पर उठा लिए जाएगें कि वायु मण्डल में प्रभु से मिलें।'' **यह स्वर्गारोहण कहलाता है।**

(कू थोमस बोल रही है)

इन सब के बाद कुछ हफ्तों के पश्चात्, प्रभु यीशु मुझे तट पर ले गया और हम उसी जगह पर बैठे जहाँ हम पहले बैठे थे और कुछ समय के लिए हमने बातचीत की और फिर उसने मुझसे कहा, मुझे तुम्हे कुछ दिखाना है। जिस घड़ी उसने मुझसे यह कहा, तभी मैंने एक आवाज को दर्शन में सुना। जब भी वह मुझे कुछ विशेष बात बताता है, मैं एक आवाज जो मेरे शरीर में भीतर से आती है को मैंने दर्शन मे सुना। वह बहुत ऊँचा स्वर था और यह दर्शन में सुना। वह बहुत ऊँचा स्वर था और यह दर्शन काफी लम्बा था। फिर

मैंने बहुत सी आवाजो को सुना, बहुत ऊँचें स्वर में आवाजे थी, मुझे ऐसा लगा की सारी दुनियां खत्म हो रहीं है, वह आवाजे इतनी ऊँचे स्वर में थी। फिर मैंने देखा सारा वातावरण सफेद था। लोग सफेद वस्त्र में उड़ रहे थें, बस अचानक से इधर–उधर से निकल कर आ रहे थे, सारा वातावरण लोगों से भर गया। तब मैंने जाना कि यह स्वर्गारोहण है। मैं रो रही थी, हँस भी रहीं थी और चिल्ला रही थी, बहुत उत्साहीत थी और फिर मैंने अपनी पोती को देखा वह सिर्फ दस महीने की थी, उसके बाल नहीं थे। अचानक से वह कमरे की खिड़की से बाहर उड़ गई। फिर सफेद वस्त्र के साथ उसके बाल कंधे तक आ गए। आप अनुमान लगा सकते है कि मैं कितनी उत्साहीत थी। फिर अगले मिनिट मैंने अपनी दूसरी पोती को देखा, वह सिर्फ चार महीने की थी, उसके भी बाल नहीं थे। वह खिड़की से बाहर उड़ गई जैसे की पहली वाली पोती उड़ी थी सफेद वस्त्रों में और उसके बाल भी कंधे तक आ गए। मैं चिल्ला रही थी, रो रही थी, हँस रही थी, उत्साहीत थी इतना कि मैंने पहले अनुभव नहीं किया था, बस उत्साहीत कि सारा घर सुन सकता था। अच्छा हुआ मेरे पति घर पर नहीं थें अगर वह घर पर होते, तो वह सचमुच समझने लगते है कि मेरे साथ कुछ गड़बड़ है। उसके बाद, परमेश्वर ने मुझे एक और दृश्य दिखाया। यह दृश्य बहुत ही दुःखी कर देने वाला था। यह बहुत ही भयानक था।

(उद्घोषक बोल रहा है)

बाइबिल भी इस बड़े विपत्ति के समय के बारें मे बोलती है जो स्वर्गारोहण के ठीक बाद में होगा। *मत्ती 24:21* **में यीशु कहता है "**उन दिनों ऐसी घोर पीड़ा होगी जैसी सृष्टि के आरम्भ से अब तक नहीं हुई है और न होगी।**" यह महाकलेश के नाम से जाना जाता है।**

(कू थोमस बोल रहीं है)

खैर, उसके बाद प्रभु यीशु ने मुझे एक और दर्शन दिया। यह वह लोगों के बारें में था जो पीछे छोड़ दिये गये थे। मैं विश्वास करती हूँ कि उनमें से बहुत से मसीही है। इसलिए वह लोग भाग रहे है। अगर वह मसीही नहीं होते तो वह नहीं भागते। परन्तु पुलिस सब जगह थी, लोग सब जगह थे और वह भाग रहे थे, डरे हुए थे और उनके चेहरे भय से आंतकित थे, कार की तरफ जा रहे थे, नाव की तरफ जा रहे थे, पहाड़ की तरफ भाग रहे थे, वह नहीं जानते थे कि उन्हें कहा जाना चाहिए, ऐसा लग रहा था मानो कोई उनका पीछा कर रहा हो। कोई राक्षस या कुछ ओर। बहुत डरे हुए थे, भयानक–भयानक दृश्य था। उसके बाद, प्रभु यीशु ने मुझसे कहा, जो कुछ भी तुमने अभी देखा वह उसकी तुलना में कुछ नही है जो तब वास्तव में होगा। और फिर उसके बाद, उसने मुझसे कहा, मेरे लोगों का स्वर्गारोहण हो चुका है। शौतान इस पूरे

संसार को अपने कब्जे में ले लेगा और वह चाहता है कि हर कोई उसके ***नम्बर 666*** को लेवें। और कोई अगर इसे लेने से मना करता है, तो उनके सिर काट दिए जाए। सो जो कोई उस पशु के नम्बर 666 को नहीं लेता है, उन्होनें अपना हृदय यीशु को दिया है, वह उसके साथ हमेशा हमेशा के लिए रहना चाहते है। (*प्रकाशितवाक्य 20:04)* और फिर जिस किसी ने भी उस पुश के नम्बर को लिया वह बस नरक की आग मे हमेशा के लिए जाएगा, वह वहाँ पर दिन और रात जलेगें, कभी चैन नहीं मिलेगा। (*प्रकाशितवाक्य 14:11)* सो सब लोगो को यह पता होचा चाहिए और याद रखना चाहिए, सिर कटवाना इतना आसान नहीं होगा। उनके सिर कटने से पहले उनको बहुत यातनाऐं मिलेगी क्योकि शैतान किसी को इतनी आसानी से नहीं जाने देगा। सो जो कोई भी यह संदेश सुन रहा है, कृपया अगर आपका प्रभु यीशु के साथ निकट सम्बन्ध नहीं है तो कृपया अपने उद्धार के बारे में कुछ करिए। साथ ही, अगर आप पीछे छोड़ दिए गए है, चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो, कभी भी उस पशु के नम्बर 666 को नही लेना। बेहतर होगा कि कुछ समय के लिए कष्ट सह ले न कि हमेशा के लिए नरक की आग मे जलते हुए पीड़ा उठाए और कृपया जो कुछ भी मैं कह रहीं हूँ उसे गम्भीरता से ले।

(उद्घोषक बोल रहा है–)

''स्वर्ग कितना वास्तविक है'' किताब को कई भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है ताकि उसे पूरे विश्व मे बाँट सकें इसके साथ ही इस किताब का MP3 अनुवाद भी है जो की इन्टरनेट पर खरीदा जा सकता है।

कू थोमस बोल रही है :–

खैर, यह किताब बहुत अच्छा कर रही है। यह किताब अन्तरराष्ट्रीय श्रेष्ठ बिकने वाली किताबों में से एक है। परमेश्वर ने डॉक्टर योगी चो को इस किताब के लिए इस्तेमाल किया और उन्होंने इस किताब का अनुवाद किया। उन्हे लगभग दो महीने इस किताब को अनुवाद करने में लगे जबकि सामान्यतया छह से सात महीने इसे अनुवाद करने में लगते है। सो, जिस दिन यह किताब छपी, यह कोरिया में तेजी से बिक गई और वहाँ पर यह श्रेष्ठ बिकने वाली किताब है। और सर्वशक्तिमान परमेंश्वर डॉक्टर योंगी चो को बहुत ही अद्भुत रूप से इस्तेमाल कर रहा है। उनके चर्च में लगभग आठ लाख लोग सदस्य है। सो परमेश्वर उन्हें इस किताब के लिए इस्तेमाल कर रहा है, परमेश्वर ने उन्हें इस किताब के लिए चुना हैं। प्रभु की स्तुति हो और यह किताब हमारे प्रभु यीशु के अन्तिम समय की किताब है। वह चाहता है कि सब मसीही इस किताब को पढ़े और दुसरों को गवाही दे और यही सब बहुत से लोग कर रहे है, जब वह एक किताब खरीदते है, वह दर्जनों और खरीदते है, वह बहुत सारी खरीदते है और कहते है कि यह बाइबिल के बाद सबसे बहतरीन

पुस्तक है गवाही देने के लिए। और फिर मुझे बहुत से ई–मेल मिलते है कि मेरे पास अब अपनो के लिए समय ही नहीं है। और विशेष कर जब मुझे छोटे बच्चों लगभग 12–13 साल के बच्चों से खत मिलता है। वह कहते है कि वह इस किताब से बहुत प्रेम करते है। वह यीशु की किताब कहकर पुकारते है और वह इस किताब के द्वारा परिवर्तित हुए है। कुछ लोग कहते है, मुझे स्कूल छोड़ देना चाहिए और परमेंश्वर के लिए काम करना चाहिए। मैं उनसे कहती हूँ कि स्कूल कभी मत छोड़ना। तुमको पढ़ना चाहिए, परमेश्वर चाहता है कि तुम शिक्षित बनों। यह मैं उनसे कहती हूँ। परन्तु जो कुछ भी तुम करो, परमेंश्वर को अपने जीवन में पहला स्थान दो। जब मैं उनके ई–मेल का जवाब देती हूँ तो वह बहुत खुश होते है। आप जानते है, हजारों लोगों के जीवन इस किताब के द्वारा बदल रहे है। क्योकि यह यीशु कि किताब है और उसने शुरू से लेकर आखिर तक इस किताब के लिए अपने सारे वायदों को पूरा किया है। उसने मुझसे कहा था कि वह सब कुछ सम्भाल लेगा, शुरू से लेकर आखिर तक, मैंनें उससे कहा मैं चिन्तित थी बहुत सी बातों के लिए, फिर उसने मुझसे कहा तुम क्यों चिन्ता करती हो, यह मेरी किताब है, मैं इसकी देखभाल करूँगा। वह हमेशा यह कहता है। और वह शुरू से आखिर तक इसको सम्भाले हुए है। जो कोई यह किताब पढ़ता है, वह जानते है यह यीशु की किताब है और वह सब की देखभाल कर रहा है। सो इस किताब के लिए उसके सारे वायदें पूरे हो गए। अब सिर्फ मेरी नाचने की सेवकाई रह गई है। उसने मुझे यह नाचने की सेवकाई के लिए तैयार किया, यह पवित्र नाच है जिसके लिए उसने मुझे तीन साल सिखाया। फिर मैं चर्च में दो साल तक नाची। अब लगभग साढ़े तीन साल से मैं उसके लिए इन्तजार कर रही हूँ। इन्तजार करना परमेंश्वर की सेवकाई के लिए सबसे मुश्किल है। आप जानते है, इससे पहले कि वह इस किताब का प्रकाशन करे, मुझे सात साल तक इन्तजार करना पड़ा। कभी कभार मैं सोचती थी कि क्या वह कभी इस किताब का प्रकाशन करेगा परन्तु उसने अपने वायदों को पूरा किया, आप देख सकते है।

(उद्घोषक बोल रहे है)

उनकी स्वर्ग की यात्राएँ खत्म होने पर, यीशु ने कू से एक विशेष वायदा किया।

(कू थोमस बोल रहीं है)

खैर, उस मुलाकाल के अन्त के बाद मैंने इस किताब की हस्तलिपि के बारें में देखभाल की। फिर वह मुझे पृथ्वी के तट पर ले गया। और हमने लगभग दो घण्टे का समय वहाँ बिताया। उसने मुझसे कहा की वह मुझे हर सोमवार को वहाँ पर ले जाएगा। यह 27 मई, 1996 की बात थी। तबसे वह बिना भूले हर सोमवार को वहाँ मेरे परिवर्तित शरीर के साथ ले जाता है। वह मुझे हर मंगलवार की सुबह 12 बजे कुछ समय के

लिए उठाता है। वह मेरे शरीर को ठीक 30 मिनट के लिए हिलाता है, न ज्यादा, न कम और उसकी उपस्थिति वहाँ होती है और वह अपने आत्मिक शरीर और मेरे आत्मिक शरीर के साथ हम तट पर जाते है। और जब हम वहाँ जाते है तो वह ज्यादातर बात करता है और मैं सुनती हूँ। फिर मैं गाती हूँ और अपने आत्मिक शरीर में मैं नाचती हूँ और यह समय मेरी ज़िन्दगी का सबसे बेहतरीन समय होता है।

(उद्घोषक बोल रहे है)

जिस कारण से यीशु क्रूस पर मरा वह यह है कि *यहून्ना 3 : 16* **और परमेंश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाएं।**

इसी प्रकार से *रोमियों 10:9* – यदि तुम मुँह से स्वीकार करो की 'यीशु प्रभु है' और हृदय से विश्वास करो कि 'परमेश्वर ने उन्हें मृतकों मे से जीवित किया' तो तुम्हारा उद्धार होगा।

(कू थोमस बोल रहीं है)

मैं कुछ लोगो को यह कहते हुए सुनती हूँ *''कौन परवाह करता हैं कि मरने के बाद क्या होगा''* **हा हा हा। तब मैं कहती हूँ,** *''अच्छा होगा कि मरने के बाद क्या होगा उसकी चिन्ता करो। यह तब जब मैं गवाही दे रहीं थी। जब आप मरते तो आप दो में से एक जगह जाते है या तो स्वर्ग या नरक।''* **वह कहते है,** *'' कौन परवाह करता है कि मरने के बाद मेरा क्या* ***होगा। वह ऐसे बात करते है जैसे वह कुछ जानते ही नही कि मरने के बाद क्या होगा।*** **मैं कहती हूँ,** *''बेहतर होगा कि तुम परवाह करो, क्योकि अगर तुम मरते हो, तो तुम्हारा शरीर मर जाता है, तुम्हारी आत्मा कभी नही मरती है। इसलिए तुम दर्द, खुशी, आनन्द और सबकुछ याद रखते हो उसी प्रकार से जब तुम जीवित थे।''* **परन्तु वह फिर भी विश्वास नहीं करते है। आह, वह मुझ पर गुस्सा करते है। मैं कहती हूँ,** *''मैं आशा करती हूँ कि एक दिन तुम मेरा कहा याद करोगें।''* *क्या तुम यीशु को जानते हो?* **वह कहते है,** *'' हम परमेश्वर को जानते है।* **मै कहती हूँ,** *''यीशु ही परमेश्वर है। वह पिता है, वह पवित्र आत्मा है, वह सबकुछ है। आप कह रहे हो कि आप परमेश्वर को जानते हो और अगर आप यीशु को नहीं जानते तो यह आपको स्वर्ग लेकर नहीं जाएगा।* **मैं बस बताती रहती हूँ परन्तु अधिकतर लोग सुनना नहीं जाहते है। सो मैं उन्हें सिर्फ यह कहती हूँ,** *'' आप अभी विश्वास नहीं करना चाहते है परन्तु मैं आशा करती हूँ कि एक दिन आप विश्वास करेगें।''* **और मैं बात करती रहती हूँ, परन्तु वह उद्धार को स्वीकार नहीं करना चाहते है। आप जानते है मैं क्या कहती हूँ, '' मैं कहती हूँ,** *''ठीक है अगर तुम*

उद्धार को स्वीकार नहीं करना चाहते हो तो ठीक है, परन्तु एक दिन, तुम जान जाओगे कि परमेश्वर के सभी लोगो का स्वर्गारोहण हो गया है, तब जो कुछ भी अभी मैंने तुमसे कहा तुम जान जाओगे, परन्तु मैं आपसे मांगती हूँ कि जब वो समय आए तो कभी भी 666 नम्बर को नहीं लेना। अगर आपने वह ले लिया तो आप नरक में हमेशा, हमेशा के लिए जलेगें। सो कृपया वह नम्बर 666 को भी नहीं लेना। क्या आप याद रखेगें?'' **आप जानते है, कुछ लोग कहते है ठीक है। मैं यह कई लोगों से कहती हूँ।**

अगर किसी ने उद्धार की प्रार्थना पहले कभी नहीं कि तो मैं प्रार्थना करना चाहूँगी। कृपया मेरे पीछे बोले, ***''प्रभु यीशु, मैं विश्वास करता हूँ की आप परमेंश्वर के पुत्र है और आप मेरे लिए मर गए। कृपया मेरे ह्रदय में आइए मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता बनिए। मैं मेरे सारे पापों के लिए क्षमा चाहता हूँ और मुझे अपने पवित्र लहू से धोइए अबसे मेरे जीवन के हर क्षेत्र पर आपका अधिकार हो। यीशु, मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर दिजिए और मुझे सामर्थ से भर दिजिए कि मैं आपकी महिमा के लिए इस्तेमाल की जा सकूं। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ, प्रेम करना चाहता हूँ, अपनी सारी ज़िन्दगी आपकी आज्ञा मानना चाहता हूँ और दुसरो के लिए एक आशिष का कारण बनना चाहता हूँ। पिता, आपका धन्यवाद हो कि आपने अपना बेटा बनाया। यीशु के पवित्र नाम में, आमीन। हालेल्लूयीयाह!''***

अगर किसी ने यह प्रार्थना मेरे साथ की है तो कृपया चर्च जाइए, परमेश्वर के वचन को पास्टर के द्वारा सुनिए और बाइबिल रोज पढिए और उसका अध्यन करे। दिन में कई बार प्रार्थना करिए और यीशु के साथ सम्बन्ध रखें।

आपका धन्यवाद, आमीन! हालेल्लूयीयाह।

(उद्घोषक बोल रहा है–)

कू थोमस की सेवकाई की ओर से आप सब लोगो को धन्यवाद जो यह कार्यक्रम देख रहे है। ''स्वर्ग कितना वास्तविक है।'' यीशु ने कहा है कि वह हमारे अनुमान से भी ज्यादा जल्दी अपने चर्च के लिए वापस आ रहा है, सो तैयार हो जाइए और आइए हम सब मिलकर परमेश्वर की स्तुति करें।